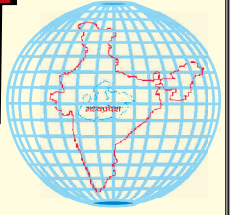




# बरली की दुनिया



बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

“मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।”

वर्ष -2

अंक 19

सितम्बर 2008

मूल्य: 5 रु.

## अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस विषेषांक साक्षरता और स्वास्थ्य

### साक्षरता

हर इंसान में पढ़ने-लिखने की क्षमता होती है, हर इंसान पढ़ने-लिखने के योग्य है। पढ़ने लिखने से हम अपना, अपने परिवार और अपने समुदाय का विकास कर सकते हैं। पढ़ने-लिखने की कोई उम्र नहीं होती है। जब भी अवसर मिले पढ़ना-लिखना चाहिए। लड़का हो या लड़की दोनों को पढ़ाना चाहिए। जब दोनों पढ़े लिखे होंगे तो सभी का विकास होगा। विकास का मतलब है लोग स्वस्थ और सुखी हो। साक्षरता और स्वास्थ्य दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। साक्षर होकर हम अपने तन, मन, आत्मा और अपने समाज सभी

को स्वस्थ रखने के लिए सभी तरह की जानकारियाँ लेकर स्वस्थ और सुखी रह सकते हैं। हम स्वस्थ और सुखी होंगे तो ही दूसरों को स्वस्थ और सुखी रहने में योगदान दे सकते हैं। इसी उद्देश्य से “बरली की दुनिया” “साक्षरता और स्वास्थ्य” से जुड़ी कुछ जानकारियाँ आप तक पहुंचा रही है।



### स्वास्थ्य और साक्षरता

संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव ने साक्षरता दिवस पर अपने संदेश में लिखा है कि दुनिया में हर पाँच 18 साल से बड़ी उम्र के लोगों में एक निरक्षर है। इस तरह दुनिया में कोई 77

करोड़ 40 लाख लोग निरक्षर है। यदि ध्यान से साक्षरों को देखे तो वे भी पढ़े लिखे नहीं हैं। साढ़े सात करोड़ बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं और लाखों बच्चे ऐसे हैं जिन्हें बीच में ही पढ़ाई छोड़ देना पड़ता है। इन बच्चों का अपना विकास नहीं हो सकता। इसलिए समाज के विकास में पूरा योगदान नहीं दे पाते हैं। बहुत सी

समस्याओं का हल दुनिया भर में साक्षरता को देकर ही कर सकते हैं।

इस साल के साक्षरता दिवस का संदेश “साक्षरता और स्वास्थ्य” है। इसका उद्देश्य इन दोनों के आपसी संबंधों को देखना है और लोगों का ध्यान इस ओर ले जाना है। निरक्षरता का सीधा असर इंसान के स्वास्थ्य पर पड़ता है।

निरक्षरता के कारण लोग दवाइयों की शीशियों पर लिखे आदेशों को पढ़ नहीं पाते हैं। लोग एड्स, मलेरिया तथा दूसरे संक्रामक रोगों के कारणों को नहीं समझ पाते हैं। 100 में से करीबन 60 लड़कियाँ या महिलाएं निरक्षर हैं जिन पर अपने परिवार के सदस्यों की देखभाल की जिम्मेदारी रहती है, वे नहीं समझ पाते कि रोगों से किस तरह बचाव किया जा सकता है और जरूरत पड़ने पर किन सेवा संस्थाओं से सहारा लेना है। जान बचाने वाली दवाइयों और दूसरी बिमारियों का इलाज जानने के लिए साक्षरता बढ़ाने के लिए अधिक निवेश और नीतियों की जरूरत है। स्वस्थ रहने के लिए सभी तरह की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए साक्षरता बहुत जरूरी है। इस अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर हम सब सरकारें, संयुक्त राष्ट्र परिवार और समाज विकास लक्ष्यों को पाने लिए साक्षरता बढ़ाने के प्रयास करेंगे तो सारी दुनिया को फायदा होगा।

#### साक्षरता का मतलब

साक्षरता का मतलब है पढ़ना—लिखना और जो भी पढ़ा या लिखा उसका मतलब जानना, समझना और उसे अपने जीवन में काम लेना। साक्षरता को जीवन में आगे बढ़ने की पहली सीढ़ी कहा है क्योंकि यह केवल कुछ अक्षरों को जान लेना ही नहीं है, इससे हमारी बुद्धि सही दिशा में आगे बढ़ती है। साक्षरता से हमारे शरीर, हमारे मन, हमारी आत्मा, हमारे समाज, हमारी आमदनी, हमारे ज्ञान—विज्ञान सभी का विकास होता है। इसी शिक्षा के बारे में बहाई लेखों में लिखा है, “मनुष्य को अत्यंत मूल्यवान रत्नों से परिपूर्ण एक खान समझो। केवल शिक्षा ही इसके काषों को उजागर कर सकती है और मानव जाति को उसके लाभ के योग्य बना सकती है।” हर इंसान के अंदर एक हीरो की खान छिपी हुई है। शिक्षा से इन हीरो को चमकाया जा सकता है। ऐसी शिक्षा से ही हमारे अंदर छुपे हुए गुण सभी को दिखने लगते हैं। शिक्षित होने से पहले साक्षर होना जरूरी है।

शिक्षा को लेकर अलग—अलग लोगों ने अपने विचार दिए जो इस तरह हैं। पूर्व राष्ट्रपति डॉ शंकरदयाल शर्मा ने लिखा “शिक्षा का लक्ष्य स्वस्थ तन में स्वस्थ मन का सतत वास और विकास है और इसीलिए व्यक्ति, समाज एवं देश के समग्र विकास हेतु शिक्षा में गुणवत्ता, लक्ष्य का ध्यान रखना एवं गतिशीलता आवश्यक है।” महान दार्शनिक प्लेटो ने लिखा “शिक्षा नए समाज की रचना का, समाज के नवनिर्माण का सर्वश्रेष्ठ साधन है। शिक्षा जीवन का समूचा

दृष्टिकोण बदल कर बुराई की जड़ पर प्रहार करने और जीवनयापन के गलत तौर—तरीकों में सुधार करने की चेष्टा है। शिक्षा का अर्थ है आत्मा को अर्थात् मन—मस्तिष्क को उस परिवेश में ले जाना है जो उसके विकास की हर अवस्था में उसके उन्नयन के लिए सबसे अनुकूल हो।” पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लिखा था “शिक्षा सहनशीलता, तर्क, प्रगति, नए विचार और सत्य की खोज करने के लिए है। यह मानव जाति को ऊँचे लक्ष्यों की ओर ले जाती है। अगर शिक्षण संस्थाएं अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभाती हैं तो यह व्यक्ति तथा देश के लिए अच्छी बात है, लेकिन अगर ज्ञान के केन्द्र ही संकीर्ण विचारों के स्थान बन जाएंगे तो देश के नागरिक कैसे यशस्वी बन पाएंगे?”

ऊपर दिए गए सभी विचारों का सबसे बड़ा संदेश है कि सभी को सही शिक्षा मिलना जरूरी है। शिक्षा से ही हमारे शरीर मन और आत्मा का विकास होता है। देश के पूर्ण विकास के लिए जरूरी है शिक्षा सभी को मिले और बढ़िया और सही शिक्षा मिलें। शिक्षा नए समाज को बनाने का सबसे अच्छा रास्ता है। शिक्षा जीवन को पूरी तरह से बदल देती है। शिक्षा से बुराई को जड़ से खत्म किया जा सकता है। इसीसे हम अपने गलत व्यवहार को बदल सकते हैं। इसी से हम आगे बढ़ सकते हैं। शिक्षा से हम अच्छे इंसान बन सकते हैं। शिक्षा देने वाली संस्थाएं भी अपना काम इमानदारी से करें तो इंसान को सही शिक्षा मिलेगी। इससे इंसान और देश दोनों की भलाई होगी। अच्छी शिक्षा से ही विकास सम्भव है।

#### साक्षरता के फायदे

अच्छे जीवन का आधार साक्षरता है। साक्षरता से आत्म विश्वास बढ़ता है। साक्षरता से आर्थिक स्वतंत्रता मिलती है। साक्षरता इंसान को जिम्मेदार बनाती है। हम पुस्तकें पढ़कर, टी. वी. देखकर या रेडिओ सुनकर अपनी साक्षरता को बढ़ा सकते हैं। साक्षरता से अपने अधिकारों को जान सकते हैं जिससे हम शोषित होने से बच सकते हैं। अन्याय हो जाए तो न्याय की मांग कर सकते हैं। सभी तरह के निर्णय लेने में हिस्सा ले सकते हैं। हमारे समाज में बाल विवाह, दहेज, लिंग भेदभाव, बलात्कार, भ्रूण हत्या, अंधविश्वास जैसी कई बुराईयाँ हैं। साक्षर होकर इन बुराईयों को दूर कर समाज का विकास किया जा सकता है।

साक्षरता एक इंसान को अपने जीवन को अच्छा बनाने में मदद करती है। अपने परिवार और समाज का विकास करने में मदद करती है। साक्षरता और शिक्षा जीवन की नींव है। जितनी मजबूत नींव होती है उतना अच्छा विकास होता है।

## साक्षरता और स्वास्थ्य

भारत के चार राज्यों बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा उत्तरप्रदेश को शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में पिछड़ेपन के लिए 'बीमारू राज्य' कहा जाता है। इसका मतलब ही यह है कि साक्षरता और स्वास्थ्य का गहरा संबंध है। साक्षरता की कमी के कारण लोग बहुत बीमारियों से पीड़ित हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में आधी से ज्यादा गाँव की महिलाओं में खून की कमी की शिकायत है। चाहे वे गरीबी रेखा के नीचे वाली हो या गरीबी रेखा के ऊपर वाली महिलाओं की बात करें तो कुपोषण की स्थिति तो दोनों ही क्षेत्रों की महिलाओं में पाई जाती है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार देश में मध्यप्रदेश ही ऐसा राज्य है जहाँ बच्चों में कुपोषण 6 प्रतिशत बढ़ा है। 1998-99 में 100 में से 54 बच्चों में कुपोषण पाया था अब वह 60 हो गया है। इसी रिपोर्ट के अनुसार नवजात बच्चे मरने के मामले में भी मध्यप्रदेश बहुत आगे है। यहाँ पर हर साल में 1000 बच्चों में से 76 बच्चे एक साल होने से पहले मर जाते हैं। 2007-08 के आंकड़ों के अनुसार 18,24,962 जन्में बच्चों में से 1,38,700 बच्चे मर गए क्योंकि ज्यादातर महिलाएं निरक्षर हैं। इन महिलाओं का बार-बार और लगातार बच्चे पैदा करना, प्रसव पूर्व देखभाल में कमी, जन्म के समय प्रशिक्षित सहायिका की कमी, एड्स, मलेरिया, अपंगता और बढ़ती हुई जनसंख्या को काबू करने का सबसे सीधा रास्ता है महिलाओं को साक्षर बनाना।

## साक्षरता, जागरूकता और बचाव

स्वस्थ समाज के विकास के लिए शिक्षा ही मूलभूत आधार है। खाना, पानी, कपड़े, घर तथा अपने आसपास की जगह साफ रखकर हम स्वस्थ रह सकते हैं एवं कई तरह की बीमारियों से बच सकते हैं। साक्षर होने से पता रहता है कि गर्भवती महिला को टीके कब लगवाने हैं और कब कौन सी जाँच करवानी है। बच्चों के टीके कब और कौन से लगेंगे? बीमार की देखभाल कैसे कर सकते हैं? स्वास्थ्य को लेकर कौन सी सरकारी योजनाएं चल रही हैं? उनका फायदा कैसे लेना है? खान-पान, रहन-सहन सही रखके बीमारियों से कैसे बच सकते हैं यह सभी जानकारियाँ लेने के लिए साक्षर होना जरूरी है।

## साक्षर महिलाएं और स्वास्थ्य

महिलाओं को साक्षर होना बहुत जरूरी है क्योंकि वह बच्चे की पहली शिक्षिका होती है। अगर महिला पढ़ी-लिखी होगी तो वह परिवार को स्वस्थ रख पाएगी। महिला परिवार

को स्वस्थ रखने के लिए साफ खाना, साफ पानी, अपने आस-पास की साफ-सफाई का ध्यान रखती हैं। इन सभी का ध्यान रखने से कई बीमारियों जैसे उल्टी, दस्त, सर्दी-खांसी, फोड़े-फुंसी, पेट दर्द, सिर दर्द, आदि से बहुत हद तक बच सकते हैं।

## पोषक आहार

महिला पूरे परिवार के खान-पान का ध्यान रखती है लेकिन खूद साक्षर नहीं होने के कारण वह खुद अपना ध्यान नहीं रख पाती हैं। जिसके कारण वह कमजोर और कुपोषित रहती हैं। खाने में ताकत देने वाला पोषक आहार के उपयोग से हमारे शरीर और दिमाग दोनों का सही विकास होता है। खाना हमारे शरीर के सभी अंगों को स्वस्थ रखने में मदद करता है। स्वस्थ खाने-पीने की कमी का ज्यादा असर महिलाओं पर पड़ता है क्योंकि महिलाएं माहवारी, गर्भावस्था और दूध पिलाने की अवस्थाओं से गुजरती हैं। तब उन्हें पोषक आहार की ज्यादा जरूरत होती है। जब महिला साक्षर होगी तो वह अपने खान-पान का ध्यान रखेगी और वे स्वस्थ रहेंगी तभी अपने परिवार का पूरा ध्यान रख सकेंगी।

## गर्भावस्था

गरीब, अशिक्षित व गाँव की महिलाएं गर्भावस्था के समय घर का और खेत का ज्यादा या भारी काम करने से जन्म से पहले ही गर्भ गिर सकता है या बहुत खून जा सकता है। बच्चा कमजोर पैदा हो सकता या मर भी सकता है। महिला साक्षर होती है तो उसे पूरी सही जानकारी होती है। वह गर्भावस्था के समय खान-पान, आराम, टिटेनस के टीके व नियमित रूप से सभी जाँच करवाती है। अपनी अच्छी देखभाल करती है जिससे माँ और बच्चा स्वस्थ होता है।

## प्रसव के समय व बाद में माँ और बच्चे की देखभाल

प्रसव के समय महिला का पूरा ध्यान रखना जरूरी है क्योंकि उस समय बहुत सारे संक्रमण महिला के शरीर में फैल सकते हैं। प्रसव गंदी जगह पर होता है तो महिला और बच्चे दोनों की जिंदगी को खतरा रहता है। बच्चे को टिटेनस होने का खतरा होता है। प्रसव अप्रशिक्षित दाई से करवाते हैं तो कई बार महिला और बच्चा मर भी सकता है पर प्रसव प्रशिक्षित दाई से करवाएंगे तो जीवन की सुरक्षितता बढ़ जाती है।

प्रसव के बाद खून का ज्यादा बहना, खून का दौरा बढ़ना,

खून की कमी होना आदि तकलीफें हो सकती हैं। इसलिए प्रसव के बाद महिला का खास ध्यान रखने की जरूरत होती है। कम से कम 6 सप्ताह तक माँ को आराम और पोषक आहार देना चाहिए। खून की कमी पूरी करने के लिए आयरन की गोलियाँ खानी चाहिए। बच्चा माँ के दूध पर निर्भर रहता है। इसलिए माँ का ध्यान रखना जरूरी है पर साथ ही बच्चे की साफ-सफाई, उसके टीके, उसकी देखभाल की जरूरत होती है।

### दवाईयों के उपयोग में साक्षरता

यह सच है कि हमारे शरीर की कई बीमारियों को ठीक करने में दवाई लेना जरूरी है। लेकिन आजकल जैसे ही हाथ-पाँव में दर्द, सिर दर्द या जरा सा पेट दर्द होता है कि तुरंत दुकान से खरीदकर दवाई खा लेते हैं लेकिन ऐसा करना गलत है। दवाईयों का उपयोग डॉक्टर की सलाह के बिना किया जाए तो इंसान की जान भी जा सकती है और दवाईयों का उपयोग सुरक्षित व सही तरीके से किया जाए तो इंसान की जान बच सकती है। दवाई कैसे, कब और कितनी लेनी है यह जानने के लिए पढ़े लिखे रहते हैं तो आसानी हो जाती है। उसे यह भी पता होता है कि दवाईयों केवल बीमारियों को ठीक करती हैं, उनके कारणों को नहीं। इसलिए वह कोई भी दवा खाने से पहले जानकारी ले लेते हैं कि कौन सी बीमारी है और कितनी गंभीर है, बिना दवा से ठीक हो भी सकती है या नहीं। पुस्तकों को पढ़कर और डॉक्टर की सलाह से रहन-सहन व खाने-पीने की आदतों में बदलाव करके भी बीमारियों से बच सकते हैं और समय पर सही इलाज करवा सकते हैं। दवाई लेने के नुकसान और फायदे भी पता चल सकते हैं, दवाई खरीदते समय ध्यान रख सकते हैं, दवाई खरीदते समय उसका बिल वह जरूर लेते हैं जिससे दवा गलत हो तो बदल सकते हैं। पढ़े लिखे न होने पर कई लोग लगाने की दवाई गलती से खा या पी लेते हैं तो कई लोग मर जाते हैं। इसलिए स्वस्थ रहने के लिए साक्षर होना बहुत जरूरी है।

### साक्षर महिलाएं और स्वास्थ्य

बहाई धर्म में लिखा है "तुने बालिकाओं की पाठशाला के लिए लिखा है। जैसा पहले लिखा गया था, यही बात अब भी सत्य है। जब तक लड़कियों का पालन पोषण विद्यालयों और शिक्षा के कन्द्रों में नहीं किया जाता, तब तक कोई सुधार नहीं हो सकता। जब तक उन्हें ज्ञान विज्ञान और अन्य विधाओं की शिक्षा नहीं दी जाती, जब तक वे विभिन्न कलायें नहीं अर्जित कर लेंती, जो आवश्यक हैं, जब तक वे

दिव्य रूप से प्रशिक्षित नहीं होती, तब तक कोई सुधार नहीं हो सकता। क्योंकि एक दिन आएगा जब ये बालिकाएं माताएं बनेगी। माताएं बालकों की प्रथम शिक्षिका होती हैं, वे ही बच्चों के अन्दर आन्तरिक गुणों का समावेश करती हैं। वे बच्चों को उत्तम आचरण और पूर्णता की प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करती हैं, दुर्गुणों के विरुद्ध सावधान करती हैं और दृढसंकल्प, स्थिरता और कठिनाइयों को सहन करने और प्रगति के उच्च पथ पर आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करती हैं। अतः बालिकाओं की शिक्षा का उचित महत्व देना आवश्यक है।"

स्वस्थ रहने में साक्षरता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। बच्चों का लालन-पालन जब साक्षर माताएँ करती हैं तो उन्हें स्वस्थ वातावरण और अच्छी शिक्षा मिलती है। साक्षरता की दर बढ़ने से माता और बच्चों का स्वास्थ्य में सुधार आ रहा है। एच. आई. वी./एड्स, मलेरिया और अन्य बीमारियों के रोकथाम के काम तेजी से हो सकते हैं। स्वस्थ समाज को पाने के लिए महिलाओं को शिक्षित होना जरूरी है। जब वे शिक्षित होगी तो ही अपने स्वास्थ्य का सही ढंग से ख्याल रख पाएगी। स्वास्थ्य संबंधी लेख व पुस्तकें पढ़ पाएगी। वे कई बीमारियों जैसे- चिकनगुनिया, डेंगू, साधारण बुखार, एच. आई. वी. एड्स आदि से खुद को व अपने परिवार वालों को दूर रख पाएगी। कोई बीमार पड़ता है तो उसकी सही तरह से देख-भाल व दवा दे सकेंगी। पढ़ी-लिखी लड़कियाँ 18 साल के बाद शादी करती हैं। कम बच्चे पैदा करती हैं, दो बच्चों में अंतर रखती हैं व पालन-पोषण सही तरीके से करती हैं। इससे उनका व उनके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। स्वास्थ्य की शिक्षा से जागरूकता आती है और इस का उपयोग वे अपने लिए, परिवार और गाँव के लिए करती हैं।

### संस्थान के समाचार

#### निदेशिका का सम्मान

11 सितम्बर 2008 को चोईथराम नर्सींग महाविद्यालय के सभागृह में "विनिता ज्योति किर्ती" सम्मान से संस्थान की निदेशिका डॉ (श्रीमती) जनक मगिलिगन को सम्मानित किया गया। यह सम्मान महिला सशक्तिकरण महासंगठन, वामा क्लब और चोईथराम नर्सींग महाविद्यालय के सहयोग से दिया गया। यह सम्मान आदिवासी व ग्रामीण महिलाओं को अलग पहचान दिलाने, महिला को अबला से सबला बनाने, महिला शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, पर्यावरण, जैविक खेती जैसे अनेक मुद्दों पर काम करने और निरक्षर महिलाओं



को साक्षर कर नेशनल ओपन स्कूल की व्यावसायिक शिक्षा दिलाने के लिए दिया गया। इसी कार्यक्रम में डॉ शोभा दुबे, डॉ अर्चना बसेर, रक्षा शर्मा, मोनिका श्रीवास्तव को भी सम्मानित किया गया। इस समारोह की मुख्य अतिथि सांसद सुमित्रा महाजन व विशिष्ट अतिथि महापौर उमाशशि शर्मा थी। विशेषतौर पर सांसद सुमित्रा महाजन ने कहा कि “जनक ने बताया कि गाँव की लड़कियाँ प्रशिक्षण के बाद सोलर कुकर ले जाती है उपयोग करती है। उनके साथ बात करने पर यह तथ्य सामने आया कि इंधन इकट्ठा करने के लिए महिलाओं को ही दूर जंगल में जाना होता है। सोलर कुकर के आने से शारीरिक मेहनत तो बचती है साथ ही शारीरिक शोषण में भी कमी आई है क्योंकि जंगल में लड़की अकेली होती है उस समय में ज्यादा बलात्कार और छेड़छाड़ होती है।”

सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबन्ध संस्थान भारत सरकार का समूह

भारत सरकार के अलग अलग मंत्रालयों के विभागों के अधिकारी 8 सितम्बर और 29 सितम्बर 2008 को दो समूहों में संस्थान आए। इनमें मंत्रालय के 24 विभागों के अधिकारी शामिल थे। ग्रामीण विकास, शहरी विकास, वाणिज्यिक कर, गृह, परिवहन, महिला एवं बाल विकास,



सामाजिक न्याय ऊर्जा, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि विकास, संस्कृति, जनसंपर्क, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, जल, विधि और विधायी कार्य के अधिकारी थे। इन अधिकारियों के लिए सितम्बर माह में भारत सरकार के सचिवालय तथा प्रबन्ध संस्थान द्वारा प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण में सरकार के अलग-अलग योजनाओं के क्रियान्वयन जानना तथा स्वयं सेवी संस्थानों के काम को समझना था जिसका वो दौरा कर रहे थे। इसी संदर्भ में उन्होंने 8 सितम्बर को 24 अधिकारी तथा 29 सितम्बर 29 अधिकारियों ने संस्थान को देखा। उन्हें संस्थान की निदेशिका व प्रबंधक ने संस्थान की गतिविधियों की जानकारी फोटो दिखाकर व संस्थान के अलग-अलग कार्यक्रम को दिखाकर दी। उन में से कुछ ने जाते समय संस्थान के किताब में लिखा है। जो इस प्रकार है : श्री ए. जे. के मेनन, निदेशक सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबन्ध संस्थान, भारत सरकार, “इस संस्थान में महिला सशक्तिकरण पर बहुत अच्छा काम हो रहा है। इसे लगातार करते रहे।” श्री अनिल कुमार, प्लानिंग कमीषनर ने लिखा है कि “यह उत्तम काम है।” सुश्री सरला मंगल वाणिज्यिक कर, विभाग ने लिखा है, ‘मैंने यहाँ से बहुत कुछ सीखा है। यह संस्थान आत्मनिर्भर है व आदिवासी व ग्रामीणों के सर्वांगीण विकास के लिए काम करती है जो आज की जरूरत है।”

संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में 8 सितम्बर को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर तीन दिन की कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अनुभव सुनाए। उसके बाद कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती रेणु पंत, अपर कलेक्टर, इंदौर ने कहा प्रशिक्षणार्थियों का आत्मविश्वास देख ऐसा लगता है कि उन पर संस्थान के प्रशिक्षण का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। उन्होंने कहा शिक्षा का हमारे जीवन में बहुत महत्व है और बिना शिक्षा के हम



आगे नहीं बढ़ सकते न ही अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख पाते हैं। उन्होने प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि वे सरकार द्वारा चलाए जा रहे शिक्षा अभियान की जानकारी सभी लोगों तक पहुँचाएं।

कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉ. (श्रीमती) पद्मा सिंह, विभागाध्यक्षा, तुलनात्मक भाषा विभाग, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय ने कहा यहाँ प्रशिक्षण पाकर लड़कियाँ अंधेरे से उजाले की ओर जा रही हैं। एक दीपक के समान बन रही हैं। जो अपने गाँव वापस जाकर शिक्षा की रोशनी फैलाएगी। आगे उन्होने कहा शिक्षा का मतलब अपने परिवेश से परिचित होना और अपना विकास करना है।

संस्थान की निदेशिका डॉ (श्रीमती) जनक मगिलिगन ने मेहमानों का स्वागत कर संस्थान का परिचय दिया और कहा कि इस वर्ष के साक्षरता दिवस का विषय है "साक्षरता और स्वास्थ्य"। संस्थान में साक्षरता सभी कार्यक्रमों का आधार है। साक्षर होकर ही अन्य विषयों को अच्छी तरह समझ सकते हैं। जब हम पढ़े लिखे होंगे तभी हमारे शरीर, मन और समाज का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

कार्यक्रम की विशेष अतिथि डॉ. भारती जोशी, सहायक निदेशिका, प्रौढ़ शिक्षा विभाग, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय ने कहा कि अगर हम किसी एक व्यक्ति को खाना खिलाते हैं तो उसका एक दिन पेट भरता है लेकिन अगर हम एक बार किसी को साक्षर करते हैं तो वह अपने पूरे जीवन में न तो भूखा रहेगा और न ही गरीब होगा। उन्होने कहा संस्थान ने प्रशिक्षण के माध्यम से सभी को एक आधारभूत पूँजी दी है जो उनके साथ जीवन भर रहेगा।

तीन दिनों के कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों ने साक्षरता का महत्व, स्वच्छता, साक्षरता और स्वास्थ्य, साक्षरता जीवन के विकास की पहली सीढ़ी, साक्षरता और हमारा विकास, चिकनगुनिया, एड्स और डेंगू आदि विषयों पर चर्चा की।

श्रीलंका से आई स्वयंसेविका सुश्री शुभा मोहन ने कहा कि साक्षरता का मतलब सिर्फ पढ़ना लिखना ही नहीं है। उसका अपने जीवन में भी उपयोग करना चाहिए। बिना पढ़े लिखे हम किसी भी विषय के बारे में नहीं जान पाएंगे। श्री चिन्मय मिश्रा, कलाकर्मी ने कहा कि ग्रामीण महिलाओं के लिए साक्षरता बहुत जरूरी है। इसी से वे सरकारी योजनाओं का लाभ उठा पाएगी और अपने अधिकारों के

प्रति जागरूक हो पाएगी। अगर हमें पढ़ना लिखना आएगा तभी हम अपने अधिकार के लिए लड़ सकते हैं। उन्होने वन भूमि अधिकार के बारे में बताया कि आदिवासियों के लिए सरकार ने एक नई योजना बनाई है, जो 75 साल से वनभूमि जोत रहे हैं और वह भूमि किसी के नाम पर नहीं है तो वे उस जमीन को अपने नाम पर करवा सकते हैं।

श्रीमती सरोज मिश्रा, कलाकर्मी ने कहा कि सिर्फ अक्षरों को पहचान लेने से कोई साक्षर नहीं हो जाता है। सही रूप में साक्षर वह है जो अपनी बुद्धि का इस्तेमाल अपने व्यवहारिक जीवन में करता है। अपनी सूझ-बूझ का इस्तेमाल करता हो।

कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती डेडी बागदरे ने एच.आई.वी. / एड्स बीमारी के कारणों और बचाव के बारे में बताया कि हम पढ़े लिखे होंगे तो ही सही जानकारी पाएंगे और अपना बचाव कर सकेंगे।

थजला बड़वानी की रिकु बडोले ने बताया शिक्षा के बहुत फायदे हैं। अगर हम पढ़े लिखे होंगे तो कोई हमें बेवकूफ नहीं बना सकता है। जिला अलीराजपुर की समतु चौगड़ ने कहा अगर हम पढ़े लिखे होंगे तो किसी पर भी निर्भर नहीं होंगे। जिला बड़वानी की सविता रावत ने कहा कि एड्स एक खतरनाक बीमारी है जो तेजी से फैलती जा रही है। साक्षर व्यक्ति ही इसके बारे में समझ सकता है और अपना बचाव कर सकता है। खरगोन की संगीता रावत ने कहा कि दवाओं का सही ढंग से उपयोग करने के लिए साक्षर होना बहुत जरूरी है। बड़वानी की मीरा चौहान ने बताया कि महिलाओं और लड़कियों के विकास में पूँजी लगाना चाहिए तभी वे अपना और अपने परिवार का सही ढंग से देखभाल कर पाएगी। महु की सीमा लोनी ने बताया कि साक्षर व्यक्ति ही अपना और अपने परिवार के स्वास्थ्य का अच्छे ढंग से ध्यान रख सकता है।

धार, झाबुआ व खरगोन जिले की प्रशिक्षणार्थियों ने साक्षरता पर भिलाली और निमाड़ी बोली में गीत लिखे और प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी सुश्री विजयश्री और आभार प्रदर्शन निदेशक मंडल की सदस्या डॉ. (श्रीमती) गीता हांडा ने किया।

छत्तीसगढ़ में दीक्षांत समारोह संपन्न

बरली ग्रामीण महिला विकास केन्द्र भण्डारी पारा कांकेर में 1 मई 2008 को दीक्षांत कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थनाओं से की गई। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि

प्राथमिक स्कूल, भण्डारीपारा की प्रधान अध्यापिका श्रीमती कमला सोनी थी। उन्होंने कहा कि “बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र द्वारा दिया जाने वाला प्रशिक्षण बहुत ही सराहनीय है। यह केन्द्र महिलाओं को कला कौशल, स्वास्थ्य शिक्षा व व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण देकर उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग दे रहा है। इस केन्द्र में सेवा दे रहीं महिलाओं में आत्मविश्वास व लगन को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ।”

कार्यक्रम की अध्यक्षता बरली विस्तार केन्द्र समिति के अध्यक्ष धुलजी रावल ने किया। उन्होंने कहा कि “इन तीन महिनों के प्रशिक्षण में जो उन्होंने सीखा है उसे जीवन में अपनाए व अपने आस-पड़ोस में इस प्रशिक्षण के बारे में बताएं ताकि दूसरी महिलाएं भी इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का लाभ ले सकें।”

केन्द्र प्रभारी कुमारी लता यादव ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि केन्द्र को 18 मई 2008 में दो साल पूरे हो रहे हैं। इन दो वर्षों में प्रशिक्षिकाओं ने कड़ी मेहनत, समिति सदस्यों का सहयोग और इंदौर से मुख्य कार्यालय का सहयोग शामिल है।

विस्तार केन्द्र समिति की सदस्य श्रीमती रश्मी रजक ने कहा कि केन्द्र में सीखाई जा रही सभी गतिविधियाँ और शिक्षाएं बहुत अच्छी हैं, महिलाओं के जीवन में सहायक है। समिति के सदस्य श्री धीरज रजक ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को बधाई दी और कहा कि, “दीक्षांत समारोह प्रशिक्षित लोगों को विदाई देने का समय होता है। यह हमें प्रशिक्षण का मूल्यांकन करने का अवसर देता है। यहाँ का प्रशिक्षण न केवल महिलाओं के हाथों में कला कौशल के द्वारा स्वरोजगार दे रहा है बल्कि आध्यात्मिक व स्वास्थ्य शिक्षा भी दे रहा है।”

प्रशिक्षणार्थी श्रीमती अनिता रजक ने कहा कि इस केन्द्र में प्रशिक्षण पाकर मैं बहुत खुश हूँ। इसके पहले मैं घर के काम तक ही सीमित थी पर अब मैं स्वास्थ्य शिक्षा, सिलाई-कटाई और व्यक्तित्व विकास के बारे में ज्ञान पा चुकी हूँ जिससे मेरा अपना विकास हुआ है। मैं इसके बाद दूसरों को भी इसके बारे में जानकारी दूंगी ताकि वे भी अपना विकास कर सकें।” कु मंजु मानकर ने कहा कि “घर में सिलाई मशीन थी पर वह उसका उपयोग नहीं कर पा रही थी। अब वह कपड़े सिलना सीख चुकी है और वह अपने सिलाई मशीन का पूरा उपयोग करना चाहती है।”

इस कार्यक्रम में 47 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम

का संचालन बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र की सहायक प्रशिक्षिका कु ईश्वरी ने की तथा कार्यक्रम का आभार केन्द्र की प्रशिक्षिका देवबत्ती ने किया।

क्वीनस् कॉलेज से छात्राओं का समूह

10 सितम्बर 2008 को क्वीनस् कॉलेज इंदौर से दो स्टाफ सदस्य के साथ 15 छात्राएं संस्थान देखने आए। इन्हें संस्थान की जानकारी संस्थान की निदेशिका (डॉ) श्रीमती जनक मगिलिगन तथा संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन ने दी। वे संस्थान की गतिविधियों को देखकर, सुनकर वे बहुत प्रभावित हुए और कहा कि संस्थान बहुत उच्च उद्देश्य रखकर काम कर रहा है। वे भी अपनी सेवाएं संस्थान को देना चाहते हैं। यहाँ पर आना उनके लिए सुखद अनुभव था।

आय. पी एस एकेडमी से छात्र छात्राओं का समूह

20 सितम्बर 2008 को आय. पी एस के विज्ञान तथा इंजिनियरींग के 40 छात्र छात्राएं अपने तीन प्राध्यापकों के साथ शैक्षणिक भेट के लिए संस्थान आए। (डॉ) श्रीमती जनक मगिलिगन, निदेशिका तथा श्री जिम्मी मगिलिगन, प्रबंधक ने इन्हें संस्थान के गतिविधियों की जानकारी फोटो दिखाकर कर दी। उन्होंने संस्थान की गतिविधियों को देखा। उसके बाद उनमें से सुश्री दिप्ती दिक्षित ने कहा कि, “यह संस्थान महिलाओं के लिए आशा की किरण है।” “यह बताता है कि महिलाएं भी आसमान में उड़ सकती हैं। यह काम बहुत ही अच्छा है और यह अच्छे प्रदर्शन के लिए जगह देता है।” श्री अनिस बक्श ने कहा, “यह संस्थान मानवजाति के लिए बहुत अच्छा काम कर रहा है।” हमने यहाँ से बहुत सारी बातें सीखी हैं उसमें कचरे के लिए कोई जगह नहीं है। इंधन का दुरुपयोग न करें। जीवन में समाज की सेवा के लिए जगह दें। ऊर्जा के नए स्रोतों को जगह दें। सभी छात्र छात्राओं को यहाँ की गतिविधियाँ बहुत अच्छी लगी। उन्होंने संस्थान को सफलता के लिए शुभकामनाएं दी।

स्वयंसेवक व सेविकाएं

इंग्लंड से श्री मेथ्यू डेविस

श्री मेथ्यू डेविस इंग्लंड से स्वयं सेवा देने आए थे। उन्होंने संस्थान में दो माह की सेवाएं दी हैं। जिसमें संस्थान के खेती, पर्यावरण, रख-रखाव में सेवा दी। इसी के साथ-साथ उन्होंने संस्थान के स्टाफ को कम्प्यूटर पर फोटो के साथ काम करना सिखाया। जाने से पहले मैथ्यू ने संस्थान द्वारा लिखी जा रही बाटिक छपाई की प्रशिक्षण पुस्तक व संस्थान में बनाई जाने वाली कलात्मक चीजों की



एक पुस्तिका बनाने में सहयोग दिया।



श्रीलंका से सुश्री शुभा सुश्री शुभा मोहन श्रीलंका से आई थी। उनका मुख्य उद्देश्य बरली संस्थान में चल रहे बाटिक छपाई को शुरू से आखिर तक अंग्रेजी में लिखा। उसी आधार पर हिन्दी में उसी प्रशिक्षण पुस्तिका को तैयार किया जाएगा।

अमेरिका से श्रीमती सपना व श्री जान श्रीमती सपना शिक्षिका व श्री जॉन कम्प्यूटर विशेषज्ञ ने संस्थान में करीबन एक महिने की सेवाएं दी। उन्होंने संस्थान में हो रहे बहुत से कामों को कम्प्यूटर पर फोटो और जानकारियों को इकट्ठा करके कोरल ड्रा का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने जाते समय कहा कि, इस संस्थान में सेवा देते समय हमने बहुत कुछ सीखा है। बरली प्रशिक्षण के द्वारा किस तरह से महिलाओं के जीवन में बदलाव लाकर उनके समुदाय में परिवर्तन कर रही है यह देखना हमारे लिए बहुत ही प्रेरणादायक था। ईश्वर इस संस्थान को और आगे ले जाने में आपके प्रयासों में हमेशा

### प्रिंटेड मैटर-बुक पोस्ट पता

---



---



---



---



आपका मार्गदर्शन करता रहें। मलेशिया से कु रीना आनंद कु रीना आनंद मलेशिया से स्वयं सेवा देने आई थी। वह एक महिने तक संस्थान में सेवा दी। इन्होंने आफिस में रखी रिकार्ड की फाईलो को व्यवस्थित करने में सहयोग दिया। रीना ने जाते समय लिखा कि "उसने यहाँ से बहुत बातें सीखी है। यहाँ के लोग बहुत अच्छे हैं। अगर जीवन में मुझे दोबारा समय मिले तो मैं यहाँ पर सेवाएं देने के लिए जरूर आऊंगी।"

#### आवश्यक सूचना

आपको सूचित किया जाता है कि बरली संस्थान की मध्यप्रदेश में कोई दूसरी शाखा नहीं हैं। हमें पता चला है कि बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान का नाम लेकर कुछ लोग गाँव में प्रशिक्षण के लिए नामांकन की जानकारी दे रहे हैं। यह बिल्कुल गलत है। प्रशिक्षण संबंधी किसी भी तरह की जानकारी के लिए बरली संस्थान से सीधे संपर्क करें।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी  
सुश्री अर्चना मारगोनवार, श्रीमती डेडी बागदरे, श्री जिम्मी

#### विशेष सूचना

प्रशिक्षण लेकर आप स्वयं के लिए, अपने परिवार और अपने गाँव के लिए जो भी काम कर रहे हों, हमें जरूर लिखकर भेजें ताकि आपके समाचार "बरली की दुनिया" में छाप सकें।

#### संपादक "बरली की दुनिया"

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान  
180, भमोरी, न्यू देवास रोड़,  
इंदौर-452010 (म.प्र.) फोन : 0731-2554066